सफलता की कहानी
नलकूप की योजना आयी

फसल की पैदावार बढ़ती पायी

श्री राजेंद्र प्रसाद, पति श्री बृज किशोर पाण्डे, ग्राम काजलखेड़ी विकासखण्ड बाबई, जिला होशंगाबाद (म.प्र.) का कृषक है। श्री पाण्डे का गॉव बाबई से 8 कि.मी. की दूरी पर है। श्री पाण्डे ने जो सफलता की कहानी श्री जे.एल.कास्दे सहायक संचालक कृषि बताई जो बड़ी रोचक व मार्गदर्शिका है।

श्री राजेंद्र ने बताया है कि हमारे खेत में सिंचाई की सुविधा नही थी। फसलो की पैदावार न के बराबर होती थी। एक दिन कृषि विभाग के ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी इस बारे में चर्चा हुई है। तो उन्होने बताया है कि कृषि विभाग में संचालित योजना राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के घटक नलकूप खनन अंतर्गत नलकूप का खन कराकर सिंचाई की सुविधा ली जा सकती है, इस पर खनन करने से उपरांत 25 हजार रूपये तथा सफल नलकूप होने पर पंप हेतु 15000 रूपये अनुदान मिलता है। यह बात सुनकर कृषक पाण्डे अपनी जीवन संगिनी को बताकर फूले नही समाया। उसने तुरंत पानी होने का सर्वे कराया। और नलकूप के खनन का आवेदन ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी प्रस्तुत किया।

उप संचालक कृषि होशंगाबाद ने हमे शीघ्र ही स्वीकृति करा दिया। श्री राजेंद्र ने स्वीकृति की सूचना पाकर खनन का कार्य करा लिया। जिससे 4 इंच भर पानी निकला। जब खेत मे गंगा निकल कर आयी तो सभी काम पवित्र होना प्रारंभ हो गया। कृषि उत्पादन भरपूर होने लगा। गॉव के अनेक किसान कृषक राजेंद्र की सफलता का राज जानने के लिए

हमेशा चर्चा करते है। श्री राजेंद्र के पास 5 हे. भूमि है। जिस पर अभी तक असिंचित फसले लिया करते थे। नलकूप खनन के बाद और पूर्व में फसलो का उत्पादन एक नजर में इस प्रकार है।

क्र	फसल	पूर्व में उत्पादन	खनन के बाद उत्पादन
1.	अरहर	5 क्विंटल / हेक्टर	–
2.	धान	10 क्विंटल / हेक्टर	40 क्विंटल / हेक्टर
3.	गेंहूँ	15 क्विंटल / हेक्टर	60 क्विंटल / हेक्टर
4.	मूँग	–	18–22 क्विंटल / हेक्टर

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि नलकूप खनन के बाद सिंचाई सुविधा मिलने के बाद पर्याप्त पैदावार हुई है। हमारे परिवार के लिए वर्षभर के लिए धान ,गेंहूँ हो गया। तथा शेष मात्रा को कृषि उपज मंडी में बेचने से हमारी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो गया है।